

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित कस्मों का दूसरे राज्यों को भी मल्लिगा लाभ

चर्चा में क्यों?

1 जून, 2022 को चौधरी चरण सहि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा विकसित गेहूँ, सरसों व जई की उन्नत कस्मों का लाभ अन्य राज्यों को भी प्रदान करने के लिये विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यावसायीकरण को बढ़ावा देते हुए गुरुग्राम की नजी क्षेत्र की प्रमुख बीज कंपनी मैसर्स देव एग्रीटेक प्रा.लि. से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं।

प्रमुख बढि

- विश्वविद्यालय द्वारा गेहूँ की डब्ल्यूएच 1270, सरसों की आरएच 725 व जई की ओएस 405 कस्मों को विकसित किया गया है।
- फसलों की उपरोक्त उन्नत कस्मों के लिये विश्वविद्यालय की ओर से गुरुग्राम की मैसर्स देव एग्रीटेक प्रा.लि. को तीन वर्ष के लिये गैर-एकाधिकार लाइसेंस प्रदान किया गया है, जिसके तहत यह बीज कंपनी गेहूँ, सरसों व जई की उपरोक्त कस्मों का बीज उत्पादन व वपिणन कर सकेगी।
- सरसों की आरएच 725 कस्म की फलियाँ अन्य कस्मों की तुलना में लंबी व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है।
- गेहूँ की डब्ल्यूएच 1270 कस्म को गत वर्ष देश के उत्तर-दक्षिण ज़ोन में खेती के लिये अनुमोदित किया गया है। इस कस्म की औसत पैदावार 75.8 क्वटिल प्रत हेक्टेयर, जबकि उत्पादन क्षमता 91.5 क्वटिल प्रत हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 12 प्रतशित है।
- जई की ओएस 405 कस्म देश के सेंट्रल ज़ोन के लिये उपयुक्त कस्म है। इसकी हरे चारे की पैदावार 51.3 क्वटिल प्रत हेक्टेयर है, जबकि दानों का उत्पादन 16.7 क्वटिल प्रत हेक्टेयर है।